बात प्रेम और भाईचारे की

मौलाना अबुल हसन अली नदवी
[अली मियाँ]

पयामे इन्सानियत फोरम
पोस्ट बाक्स ९३, लखनऊ-२२६००७

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

महान विचारक एवं लेखक मौलाना अबुल हसन अली नदवी के नेतृत्व में अक्टूबर १९८३ ई० में 'पयामे इन्सानियत फोरम' के एक शिष्ट मण्डल ने गोरखपुर का दौरा किया। इस सिलसिले में एक आयोजन गोरखपुर से लगभग ५० किलोमीटर दूर स्थित महराजगंज कस्बे में हुआ। समारोह की अध्यक्षता स्थानीय हायर सेकेन्ड्री स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रामापति तिवारी ने की। इस अवसर पर पयामे इन्सानियत तहरीक के संस्थापक मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने जो तकरीर की, हम यहाँ उसका हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। यह मौलाना नदवी की टेप की हुई असल उर्दू तकरीर का हिन्दी अनुवाद है।

www.abulhasanalir

आशा है अपने देशवासियों के दिलों में प्रेम और भाईचारे की ज्योति जगाने और राष्ट्रीय एकता को बल देने में यह प्रयास सहायक सिद्ध होगा। ईश्वर हमें सद्बुद्धि और कुछ अच्छे काम करने की शक्ति प्रदान करे।

क़िला, रायबरेली
१८-१२-१९८३ ई०
१२-३-१४०४ हिजरी

अनुवादक

बात प्रेम और भाई चारे की

मैं अध्यक्ष महोदय और आप सब लोगों के प्रति आभारी हूं कि आपने मुझे इससे पहले कभी देखा नहीं, शायद सुना भी न हो, फिर भी आपने मुझे जो सम्मान दिया और मेरे बारे में जो उत्साहवर्द्धक शब्द कहे उससे मैं अपने अन्दर एक खुशी महसूस करता हूं और इससे मेरा हौसला बढ़ा है। इन्सान सिर्फ खाने का, कपड़े का और पैसे का भूखा नहीं है। उसकी भूख और प्यास सिर्फ पैसे और खाने पीने की चीजों से नहीं जाती। वह सबसे ज्यादा भूखा प्रेम का है अगर इन्सान को इस दुनिया में यह न मिले और सब कुछ मिल जाय तो यह दुनिया ऐसी मालूम होगी जैसे कोई म्यूजियम में गया हो जहाँ सब कुछ देखते हैं और हाथ कुछ भी नहीं लगता। वहाँ से खाली हाथ आते हैं। मुहब्बत ऐसी चीज है जिससे आदमी अपनी बीमारी भूल जाता है, अपनी थकान भूल जाता है, गुस्सा भूल जाता है, दुख-दर्द भूल जाता है। इन्सान असल में मुहब्बत और प्रेम का भूखा है। मैं आप सब भाइयों के प्रति आभारी हूं कि आपने मुझ में विश्वास व्यक्त किया और हम पर एतबार किया।

इस जमाने की बहुत बड़ी बीमारी यह है कि आदमी को आदमी का एतबार नहीं रहा, और हमारे राजनीतिज्ञों ने (खुदा इनको माफ करे और इनसे अच्छे काम ले) एतबार खो दिया है। अपना एतबार तो खोया ही दूसरों का एतबार भी इन्होंने कमजोर कर दिया। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा। आदमी डरता है कि मालूम नहीं कौन सी मतलब की बात कही जावेगी और अब तो लोगों का यह हाल हो गया है कि लोग

यह मानने के लिए तैयार नहीं कि बेमतलब की कोई बात कही जा सकती है। या दुनिया में कोई एक आदमी भी ऐसा निकल सकता है जो अपने मतलब (स्वार्थ) की बात न कहे। जो अनुभवी लोग हैं वह कहते हैं कि मतलब की बात जरूर आती है। फ़र्क़ सिर्फ समय का है। कोई फूहड़ होता है जल्दबाज़ होता है वह जल्दी मतलब की बात कह देता है और कोई जरा समझदार और सयाना होता है वह देर में मतलब की बात कहता है। कोई अभी कह देगा, कोई शाम को कहेगा, कोई कल कहेगा, कोई छः महीने बाद कहेगा। मगर कहेगा जरूर। अब दुनिया का एतबार जाता रहा। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा। तो मैं आपके प्रति आभारी हूं कि मैं यहाँ पहली बार आया आप मुझे जानते नहीं फिर भी आपने अपने भाइयों का एतबार किया। उन्होंने कहा कि एक भाई आने वाले हैं वह कुछ अच्छी बातें कहेंगे। आप अपना काम-काज छोड़कर यहाँ इतनी बड़ी संख्या में जमा हो गये। यह बात हौसला बढ़ाती है। और यह दुनिया हौसला हिम्मत पर ही चल रही है। वरना दुनिया का हाल तो यह है कि आदमी कपड़े फाड़कर जंगल को निकल जायें। पागल हो जायें। और इन्सान से बिल्कुल निराश हो जायें कि इन्सान अब किसी काम का रहा नहीं। आपने सुना होगा कि दुनिया उम्मीद पर कायम है। यह बात सच है कि दुनिया उम्मीद पर कायम है। और इन्हीं बातों से उम्मीद बँधती है कि भला इन भाइयों से हमारा क्या रिश्ता। इन्होंने हमें देखा नहीं, हमने इन्हें देखा नहीं। यह अखबार और रिसाले भी (पत्र-पत्रिकायें) अधिक नहीं पढ़ते। कुछ किताबें भी न पढ़ी होंगी। और अगर होंगी तो मदरसे में पढ़ी होंगी। फिर भी इन्होंने मुझ पर एतबार किया और अभी यह इन्सानियत से निराश नहीं है।

मैं एक सन्त का किस्सा सुनाता हूं। इसी से अपनी तकरीर शुरू करता हूं और इसी पर खत्म करूँगा। दिल्ली में एक बड़े सन्त थे। दिल्ली में उनको दिल्ली वाले सुल्तान जी कहते हैं, कोई हजरत महबूब

www.abulhasanalir

इलाही कहता है कोई सुलतानुलमशायख़ कहता है। शायद आपने सुना हो कि दिल्ली में निजामुद्दीन एक मुहल्ला है। यह उन्हीं बुजुर्ग के नाम पर है। उनका नाम था निजामुद्दीन औलिया। उनके पास कोई भाई उनके कोई अकीदत्त मन्द (श्रद्धा रखने वाले) कैंची लाये। उन्होंने कहा मुझे कैंची की जरूरत नहीं है। मेरा काम काटना और फाड़ना नहीं है। मैं दिलों को सीता और जोड़ता हूं। मैं दिलों को फाड़ता नहीं हूं काटता नहीं हूं। कैंची तो काटने और फाड़ने की चीज है। यह तो किसी और को दो। मुझे तो कोई सुई लाकरके दो जिससे मैं अपना काम कर सकूं। मेरा काम है मिलाना मेरा काम जुदा करना नहीं है।

www.abulhasanalir

इस समय कैंचियां तो बहुत चल रही हैं और बड़ी सस्ती हो गई हैं। मेरे ख्याल में तो बहुत से लोग यूं ही लिये लिये फिरते होंगे। और किसी चीज को आप क्या कहें जबान कैंची बन गई है। अख़लाक़ (आचरण) क़ैंची बन गये हैं। और सब से बड़ी कैंची क्या है? आप मुझे क्षमा करें। मैं पढ़ता लिखता रहता हूं। लोगों से मिलता भी हूं। मैं तो यह देख रहा हूं कि सबसे बड़ी कैंची राजनीति है। यह बहुत बड़ी कैंची है। बड़ी धारदार और बहुत लम्बी। एक कैंची ऐसी होती है जिसकी मार या जिसकी पहुंच बीता भर या इससे भी कम होती है। लेकिन राजनीति की क़ैंची ऐसी है कि यहां हाथ में लीजिये और लखनऊ तक काम कर जाइए। दिल्ली में कैंचियां हैं जो सारे हिन्दुस्तान में अपना काम कर रही हैं। राजधानी और हर राजनीतिक पार्टी क़ैंची बनी हुई है। हर राजनीतिक नेता और हर पत्रकार हर लिखने वाला यही काम कर रहा है। क़लम क़ैंची बन गया है। वह कलम जो मिलाने के लिए था और वह जबान जो मिलाने के लिए थी जो प्रेम के फूल बरसाने के लिए थी, कहते हैं कि अमुक आदमी के मुंह से तो फूल झड़ते हैं, यह शायद पुराने जमाने की बातें थीं। आज इन होंठों से कांटे बरस रहे हैं।

ज़ुबानें कौमों से क़ौमों को जुदा करने वाली बन गई हैं। क़लम गले कटवाने वाला बन गया है।

एक बार लखनऊ में एडीटर कान्फ्रेंस थी और उसमें हमारी प्राइम मिनिस्टर भी आई थीं उन्होंने उसका उद्घाटन किया था तो हमारे कुछ कान्फ्रेंस वालों को नदवा में, जिसका मैं सेवक हूं, बुला लाये। उनमें अख़बारो के एडीटर साहिबान भी थे। उनमें मुसलमान भी थे, हमारे हिन्दू भाई भी थे। बड़ा अच्छा सम्मेलन था, मुझसे कहा गया कि मैं उनको ऐड्रेस करूं मैंने उनसे कहा कि फारसी का एक पुराना शेर है। है तो ग़ज़ल का शेर, यही इश्क़ व मुहब्बत का शेर, किसी ने अपने प्रियतम के लिए कहा है, आज मैं आपके सामने पढ़ता हूं :—

www.abulhasanalir

आहिस्ता ख़राम बल्कि मख़राम
ज़ेरे क़दमत हज़ार जान अस्त्

कहने वाला शायर ने अपने महबूब को सम्बोधित करते हुए कहा है कि तुम्हारे क़दम के नीचे हज़ार जानें हैं, आहिस्ता चलिएगा बल्कि न चलिए तो बेहतर है। और मैं आपसे कहता हूं कि "ज़ेरे क़लमत हज़ार जान अस्त" कि आपके क़लम के नीचे हज़ार जानें हैं। महबूब के क़दम के नीचे हों न हों लेकिन हम गवाही देते हैं और दिन रात तमाशा देखते हैं कि आपके क़लम के नीचे हज़ारों नहीं लाखों जानें हैं। बेचारे शायर की पहुंच तो हज़ार तक थी, और एक आदमी से मुहब्बत करने वाले कितने लोग होंगे। लेकिन अख़बार वालों का ख़ुदा भला करे आज पत्रकारिता इतनी तरक्की कर गई है और इसके प्रभाव इतने बढ़ गए हैं कि लोग इसे "मजेस्टी कहते हैं और यह बात सही भी है। जैसे किसी ज़माने के बादशाहों को सम्बोधित किया करते थे। आजकल इसको 'हर मजेस्टी' कहना चाहिए। इसकी पहुंच कहाँ नहीं है। इसका कार्यक्षेत्र और प्रभाव

क्षेत्र किसी बादशाह के अख़तियार से कम नहीं है। अगर यह क़लम कैंची बन जाये तो इतनी बड़ी इतनी दूर तक असर करने वाली क्या दुनिया में कोई कैंची होगी ?

मैंने उनसे कहा कि वह ज़माना गया जब महबूब से कहते थे कि हुज़ूर आपके क़दमों के नीचे हज़ारों जानें हैं। आप न चलें तो अच्छा है और चलें तो बहुत ध्यान देकर चलें कि कोई मारा न जाये। मैं आपसे कहता हूं एडीटर साहिबान से मैंने कहा कि 'ज़ेरे क़लमत हज़ार जान अस्त'—आपके क़लम के नीचे हज़ारों जाने हैं और आज दुनिया में क़लम नहीं कैंचियाँ काम कर रही हैं।

www.abulhasanali

ऐसे अल्लाह के बन्दे हमारे देश में बहुत हुए हैं जिन्होंने जोड़ने और दिलों को मिलाने के काम किये हैं। मैं बहुत दुनिया फिरा हुआ हूं। मैं दुनिया के बहुत दूर दूर हिस्सों में गया हूं। और मैंने बहुत से मुल्क भी देखे हैं। लेकिन यह प्रेम की बाँसुरी बजाने वाले, मुहब्बत की सुरीली आवाज सुनाने वाले, मुहब्बत के गीत गाने वाले हमारे मुल्क में जितने हुए दूसरे मुल्कों में कम मिलते हैं। मैं थोड़ा सा इतिहास का विद्यार्थी भी हूं मुझे इसका थोड़ा सा शौक भी है बल्कि एक तरह की हाबी है लत जैसे होती है। मुझे इतिहास की लत है। मैंने इतिहास पढ़ा है। और इतिहास हमें बताता है कि हमारे इस देश में ऐसे ख़ुदा के बन्दे बाहर से आये और यहाँ भी पैदा हुए जिन्होंने वही काम किया जो मुई करती है। जैसा कि हज़रत महबूब इलाही की बात सुनाई। उनका नाम तो महबूब इलाही है लेकिन वह असल में इन्सान से मुहब्बत करने वाले थे। आप हमारे इन बुज़ुर्गों, सूफ़ी, सन्तों के किस्से पढ़ें तो मालूम होगा कि मुहब्बत क्या चीज़ है और इन्सान की क्या इज्ज़त उनकी नज़र में थी।

आदमी कोई गल्ती करता है तो उसको मजहब के सर थोपते हैं और मज़हब को उसका जिम्मेदार बनाते हैं। और यहाँ तक कह देते हैं कि यह तो उनकी पुरानी आदत है। यह हमेशा ही ऐसी हरकतें करते रहे हैं। हालाँकि ग़ल्ती एक व्यक्ति की होती है उसका सम्बन्ध न पूरे गिरोह से होता है न मजहब से। असल बात यह है कि हमारे मन में ज़हर आ गया है, और उसने हमारी पूरी व्यवस्था को, हमारे माहौल को हमारी सोसाइटी और समाज को गन्दा करके रख दिया है। इस ज़हर को दिल से निकालने की जरूरत है। अगर ऐसा न किया गया तो आदमी का अपने घर से निकलना मुश्किल हो जावेगा। मैं कोई पहुंचा हुआ आदमी नहीं हूं मामूली इन्सान हूं। मगर आदमी को अल्लाह ने यह ताक़त दी है कि सामने की चीजों को देखकर अन्दाजा लगाये। बिजली चमकती है दो चार बूंदें पड़ती हैं और गरज होती है तो आदमी यह कहता है पानी बरसने वाला है। इसमें कोई पैग़म्बरी की बात नही है। यह रोज का अनुभव है। इसी तरह आज हमारे सामने वाली घटनायें यह बतला रही हैं कि अगर यही हाल रहा, इस देश में यही सब कुछ होता रहा और हमने इसको नहीं रोका तो हमारे देश और समाज की ख़ैर नहीं। यह दुर्भावना यह नफरत व बदगुमानी जो हमारे अन्दर पल रही है और हमारा लिट्रेचर, हमारे एजूकेशन का सिस्टम, हमारी फ़िलासफी और सबसे बढ़कर राजनीति वह इस नफ़रत को बढ़ा रही है।

www.abulhasanalir

किसी बड़े योरोपियन फिलास्फर ने कहा है कि अगर तुम किसी क़ौम को अपने क़ाबू में रखना चाहो तो दो बातों का ध्यान रखो। इनको खत्म न होने दो—एक नफ़रत दूसरे ख़ौफ और भय बस यह दो चीजें क़ायम रखो—किसी से डराते रहो और किसी से लड़ाते रहो, तुम लीडर बने रहोगे। और तुम्हारी गद्दी सुरक्षित रहैगी। उस फ़िलास्फ़र का नाम सी० ई० एम० जोड़ है और उसकी दो बहुत प्रसिद्ध किताबें हैं—'माडर्न

फिलास्फी' तथा 'गाइडटू माडर्न विकेडनेस'। अभी कुछ साल पहले वह लन्दन यूनीवर्सिटी में दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष थे। प्रोफेसर जोड ने लिखा है कि अगर नफरत (घृणा) और भय के लिये तुम्हें अपने यहाँ की कोई कम्यूनिटी न मिले तो कहीं ऊपर से ले आओ, आसमान से ले आओ। कोई ऐसा विचार जिसका अस्तित्व न हो, कहीं वह चीज पाई न जाती हो, किसी सितारे को, सूरज को, चांद को, मछली या दरिया को, किसी को इस प्रकार प्रस्तुत करो कि तुम्हारे जो मानने वाले हैं उससे नफ़रत करने लगें और डरने लगें बस तुम्हारा काम बन गया। तुम आराम से घर बैठे रहो। तुम्हारा काम स्वत: बनता जायेगा। लोग लड़ते रहेंगे या डरते रहेंगे और तुम्हारा उल्लू सीधा होता रहेगा। मुसीबत यह है कि यह राजनीतिक लोग यह नहीं देखते कि इस समय तो काम निकल गया मगर आगे क्या होगा। देश अगर डूबा तो हम कहाँ बचेंगे। हमने माना कि इस समय हमारा काम निकल जायेगा। हम चुनाव जीत लेंगे हम किसी जगह के चेयरमैन बन जायेंगे। हम पापुलर हो जायेंगे। हमको लोग सर पर बिठायेंगे आंखों में जगह देंगे। लेकिन इसके बाद फिर समय आयेगा। सम्भव है वह हमारी ज़िन्दगी ही में आ जाये और हमारी ज़िन्दगी में न आये तो यह जो आगे आने वाली पीढ़ी है, हमारे बच्चे हैं इनके ज़माने में आयेगा।

www.abulhasanalin

आदमी अपने बच्चों का भी ख्याल करता है। उसी के लिए मेहनत करता है ज़मीन ख़रीदता है। बाग़ लगाता है। कोई कहे कि यह बाग़ आपकी ज़िन्दगी में कब फल लायेगा तो हम उससे कहेंगे—यह हम अपने लिए नहीं अपने बच्चों के लिए लगा रहे हैं। यह मानव स्वभाव है कि वह अपने बच्चों के लिए सामान करता है। आप अपने बच्चों को नहीं सोचते कि अगर इस देश में नफ़रत और डर इसी तरह से रहा तो आज से साठ सत्तर साल बाद हम दुनिया में नहीं होंगे उस समय इस देश की क्या हालत होगी ? हमारे बच्चे किस माहौल में ज़िन्दगी गुजारेंगे ?

जिस तरह से किसान बीज डालता है तो खेती उगती है फिर काटता है। ऐसे ही नफरत और भय की भी खेती है। नफरत और भय की खेती सबसे अधिक फलने फूलते वाली है। नफरत के बीज आप डाल दीजिये, भय के बीज आप बिखेर दीजिये इसके बाद फिर वह ऐसी फसल इतनी पैदावार होगी कि न आपके गेहूं की इतनी पैदावार होती है न जौ की होती है। ज्वार की होती है न धान की होती है। किसी की नहीं होती। आज हमारे देश में यही खेती बोई जा रही है। नफ़रत और ख़ौफ़ की। एक कम्यूनिटी दूसरी कम्यूनिटी से डरती भी है और अपने डर को छिपाती भी है। मैं आपको बता दूं यह भी एक काम्प्लेक्स है। कभी कभी एक इन्सान को देखते हैं तो मालूम होता है कि बड़ा शेर मर्द है, बहादुर है लेकिन अन्दर भय बैठा हुआ है। मैं साफ़ कहता हूं कि मुसलमान हिन्दू भाई से डरता है और हिन्दू भाई मुसलमान से डरता है। गुस्सा भी उसके अन्दर है और डरता भी है। साथ ही साथ उस डर को छिपाता भी है। आदमी डर को छिपाता भी है। वह डर को ज़ाहिर नहीं करता कि लोग उसे कायर कहेंगे। ज़ाहिर तो नहीं करता लेकिन दिल में डर बैठा हुआ है आप दिल चीर करके देखिये। एक एक शहरी (नागरिक) के दिल में डर बैठा हुआ है। हिन्दू मुसलमान से डर रह है। साफ सुन लीजिये। मुझसे डरने की कोई बात नहीं है। हिन्दू मुसलमान से क्यों डर रहा है इसलिए कि उसने उनको पहचाना नहीं। वह नहीं जानता कि उसके अन्दर प्रेम की कितनी भावना है ख़ुदा ने उसके अन्दर कितनी मुहब्बत रखी है।

www.abulhasanalir

अगर इस मोहब्बत को अपनी हालत पर छोड़ दिया जाये और मुहब्बत करने का उसको मौका दिया जाये तो ऐसी मुहब्बत करेगा जैसे कि कोई माँ अपनी औलाद से करती है। लेकिन जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरे से परिचित ही नहीं हैं तो मुहब्बत का रिश्ता मज़बूत कैसे हो सकता है।

हमारा इतिहास, हमारा लिट्रेचर हमारी सोसयटी सब मुहब्बत के गीतों से भरी हुई है लेकिन प्रेम की भावना को अंकुरित तो होने दिया जाये। उस पर तो ऐसा ढक्कन लगाया गया है और उसको सील कर दिया गया है कि मुहब्बत निकलने नहीं पाती। सूराख़ जो किया जाता है वह नफ़रत के निकलने के लिए किया जाता है। मुहब्बत के सूराख सब बन्द और नफ़रत के सूराख सब खुले हुए। नफ़रत का मौका हर जगह है और वही आदमी पापुलर होता है, लीडर बनता है, चुनाव जीतता है और वही आदमी फिर गद्दी पर आता है जो नफ़रत करना सिखता है जो डराता है। और जो मुहब्बत की बात करता है उसको लोग कहते हैं कि आप अपने घर बैठिए। आपका काम नहीं है। आपकी हमें जरूरत नहीं है। आप अपने यह गीत वहीं अलापियेगा। मैं आपसे कहता हूं कि हमारी आपकी सबकी कमजोरी यही है। अभी एक आदमी आ जाये और जोशीली तक़रीर करे और कहे, देखो ! भाई मुसलमानों ! देखो यह जुल्म हो रहा है इस देश में और यह हो रहा है, वह हो रहा है, तुम्हारे हिन्दू भाई तो यह करना चाहते हैं और तुम्हें इज्जत के साथ रहने नहीं देना चाहते। तो मैं यहाँ चिल्लाता रहूंगा। मेरे सब साथी मुंह देखते रहेंगे और सारा मजमा उधर ही चला जायेगा। फिर उसी के जिन्दाबाद के नारे लगने लगेंगे। ऐसे ही कोई भाई आ जाये और हिन्दू भाइयों के जज़बात से खेलने लगे और भड़काने लगे कि पाकिस्तान ने यह तैयारियाँ की हैं तो लोग हमारे अध्यक्ष जी को भी छोड़ देंगे, हमको भी छोड़ देंगे और कोई बड़े से बड़ा लीडर आ जाये उसकी बात भी न सुनेंगे। यह हमारी कमजोरी इसलिए है कि उन लोगों को मौक़ा दिया गया जो इन्सान को कमजोरी से फ़ायदा उठाना चाहते हैं। उन्होंने यह समझ लिया है कि इन्सान से काम लेने का आसान रास्ता तरीक़ा यह है कि उसके जज़बात को भड़काओ। उसमें नफ़रत और जोश पैदा करो और फिर अपना काम

www.abulhasanalir

करलो। और जो मुहब्बत की बात करते हैं, ग़म खाने की बात करते हैं अपने को कन्ट्रोल में रखने की बात करते हैं उनकी बात सुनने वाले थोड़े से हैं। चन्द आदमी बैठे रहेंगे। वह भी किसी को नींद आने लगेगी कोई सो जायेगा। यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है। अगर यह धारा इसी तरह बहता रहा तो यह मजमा भी न हो सकेगा जो इस समय हुआ है। दस बीस साल के बाद भी आप न कर सकेंगे। अभी खुदा ने मौक़ा दिया है कुछ मेहनत कर लीजिये और मिलकर रहना सीखिये। और सब मिलकर इस देश को बनाने की कोशिश कीजिये। इस देश में अल्लाह ने जो नेमतें (वरदान) पैदा की हैं उनकी क़दर कीजिये। इस देश की एक एक चीज से मुहब्बत कीजिये। और आदमी की तरह रहना सीखिये तो जिन्दगी का मजा आयेगा। जिन्दगी बे पैसे के भी कितनी मज़ेदार है। थोड़े खाने के साथ भी कितनी मज़ेदार है। जिस परिवार में मुहब्बत है वह खानदान, चाहे सूखी रोटी खाये लेकिन कैसे चैन की बांसुरी बजाते हैं उस खानदान के लोग और कैसी मीठी नींद सोते हैं, कैसे सुखी होते हैं। और जिस खानदान में—छोटा हो या बड़ा—नफ़रत है, मुक़दमाबाजी है, भाई भाई को नहीं देख सकता वहां हालत यह है कि रात को नींद नहीं आती कि मालूम नही कौन गला घोंट दे। और कौन घर में घुस आये और क्या कर दे। कौन हमारी इज्ज़त खाक में मिला दे। हमारी बेइज्जती करा दे। हमारे ख़िलाफ मुक़दमा दायर कर दे और फंसवा दे। खानदान में सब कुछ है कमाने वाले बहुत हैं, बैंक बैलेन्स बहुत, घर में टी० वी० भी है फ्रीज भी है, ऐश व आराम का सामान भी है लेकिन जिन्दगी में कोई मजा नहीं। आराम से चार आदमी बैठकर बातें करें इसको तरसते हैं। और जहां कुछ नही है न रेडियो न टी० वी० है न अच्छे अच्छे बर्तन हैं न फरनीचर है न डिकोरेशन का कोई सामान है। मगर मुहब्बत है। भाई भाई से मुहब्बत करता है। एक मां है। उसके चार बच्चे हैं दो बच्चियां हैं सब आपस में मिल जुल कर रह रहे हैं और

www.alhasanain

एक दूसरे पर जान देते हैं और दूसरे चचेरे भाई वगैरह कभी जो आते हैं सब झुक कर सलाम करते हैं। दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। बड़ी बूढ़ी औरतें प्यार करती हैं। बड़े बूढ़े सर पर हाथ रखते हैं और छोटे पैर छूते हैं। उस घर में मालूम होता है कि जीने का मजा और वहां की सूखी रूखी रोटी में मजा है दूसरी जगह के हलवे पराठों में वह मजा नहीं।

तो मेरे भाइयों! मुहब्बत के साथ जीना सीखिये। आपको मालूम तो हो कि मुहब्बत के साथ जीने में जिन्दगी का क्या मजा है। यह भी कोई जिन्दगी है कि आदमी आदमी से डर रहा है। मुहल्ले वाला मुहल्ले वाले से डर रहा है। एक आफिस में काम करने वाले को उसी आफिस में जो उसके साथ काम करता है मेज से मेज लगी हुई है उय पर भरोसा नहीं कि किस समय उसके खिलाफ़ फ़ाइल दाखिल कर दे, शिकायत कर दे, रिश्वत लेने में पकड़वा दे, रिश्वत खुद लेवे और उसको पकड़वा दे। आज यह हालत हो रही है दफ्तरों की, यह हालत हो रही है मुहल्लों की, यह हालत हो रही है संस्थाओं की, जो आदमी बनाने का काम करती हैं। क्षमा करें प्रिंसिपल साहब, यहां का हाल अच्छा होगा। लेकिन हम शहरों का हाल जानते हैं। वहाँ की यूनिवर्सिटीज और कालेजेज में कहीं भी किसी को भरोसा नही है। विश्वास तो बिल्कुल समाप्त हो गया है। कोई किसी पर भरोसा करे और उससे उम्मीद रखे ऐसा नहीं है। विद्यार्थी अध्यापक का सम्मान नहीं करता, अदब नहीं करना। अध्यापक छात्रों से प्रेम (शफ़क़त) नहीं करते। दोनों एक दूसरे के विरोधी बने हुए हैं। एक दूसरे को उखाड़ना और बरबाद करना चाहते हैं।

www.abulhasanalir

मेरे भाइयों! लम्बी तक़रीर की जरूरत नहीं। आप आदमीयत सीखिये। हमें आदमीयत की तालीम (शिक्षा) सबसे पहले हमारे पैग़म्बरों ने दी जो ख़ुदा की तरफ से इसी काम के लिए भेजे गये थे। फिर बाद में

जो उनके उत्तराधिकारी थे और उनकी तरह के काम करने वाले थे, जो बुजुर्ग थे, अल्लाह वाले लोग थे जैसा कि हमने अभी आपको दो किस्से सुनाये वह एक ही बुजुर्ग के दो किस्से हैं कि उनके पास कोई बहुत अच्छी बनी हुई कैंची भेंट देने लाये। उन्होंने कहा हमें कैंची की कोई जरूरत नहीं। हमें तो सुई दो मैं फाड़ने का काम नहीं करता मैं तो दिलों को सीने का काम करता हूं। यह कैसी सीधी बात है सीधी सादी कहानी है। कोई फ़िलास्फी नहीं है मगर कैसी सच्ची बात है। आज इस देश को सुई की जरूरत है। कैंची की कोई जरूरत नहीं। कैंची घर घर चल चुकी। गाँव गाँव चल चुकी। मुहल्ले मुहल्ले चल चुकी। अब मुहब्बत की प्रेम की सुई की जरूरत है कि आदमी आदमी को पहचाने। मुहब्बत करना सीखे। मदद करना सीखे। और ऐसी बातों की हमारे देश में कमी नहीं। आज भी ऐसे लोग हैं जो इन्सानों से इन्सानियत के नाते से प्रेम करते हैं।

www.abulhasanali

एक बार हम लोग उतरौला से आ रहे थे। हमारे डाक्टर साहब भी मौजूद हैं यह ड्राइव कर रहे थे। हम अपने एक दोस्त की शादी में गये थे। वहाँ से चले तो साहब, होने वाली बात एक इक्का एकदम से आकर सामने खड़ा हो गया, इक्के में एक जवान औरत थी जो शायद विदा होकर मैके आ रही थी या ससुराल जा रही थी। घूंघट काढ़े हुए वह सामने आ गई। डाक्टर साहब ने बहुत बचाया लेकिन जरा सा धक्का लगा और वह गिर गई। बेहोश हो गई। हमारे डाक्टर साहब तो डाक्टर हैं ही वह अपने साथ दवायें भी रखते हैं। खैर उसको थोड़ी देर के बाद होश आ गया। उधर सारा गाँव जमा हो गया। वह नहीं देखते कि हम लोगों को क्या दिलचस्पी कि उसको मारें। हम तो सीधे जा रहे थे लखनऊ पहुंचने की जल्दी थी हम कोई दुश्मन तो थे नहीं। हम गाँव को जानते भी नहीं। लेकिन लोग जमा हो गये। लाठियाँ लेकर। और कहा

कि जाने नहीं देंगे। करीब था कि कोई कम्यूनल रायट हो जाये और हम सब की जानें जायें, कि इतने में एक मास्टर साहब हिन्दू भाई खड़े हो गये कि यह नहीं हो सकता उन्होंने चारपाई बिछाई और कहा कि कुछ बाल बीका नहीं हो सकता उनका और किसी को बढ़ने नहीं दिया। वह हमें थाने ले गये और वहाँ चाहते थे कि खुद ही पैसा खर्च करें। कहा गया कि हमारे पास पैसा है। उन्होंने कहा कि नहीं यह हमारा फ़र्ज है। लोगों ने कहा कि आप हिन्दू हैं। यह मुसलमान हैं। आपको ऐसी क्या हमदर्दी ? कहने लगे आदमी तो हैं। खुदा उनका भला करे। उसके बाद कभी मुलाकात नहीं हुई। यह देश इसी से क़ायम है अब तक और क़ायम रहेगा। हम यह चाहते हैं कि इन्सानियत का यह सन्देश गाँव गाँव पहुंचाये और हमारे सब हिन्दू भाई और मुसलमान भाई इस बातको सीखें। यही पयामे इन्सानियत का उद्देश्य है।

www.dulhasanali

पुरानी मसल है—नक्कारखाने में तूती की आवाज। इस नक्कारखाने में हम जैसे तूती की अवाज कौन सुनेगा। जहाँ इतने अख़बार निकलते हैं। इतने जलसे होते हैं। वहाँ हम एक तहसील के अपने इन कुछ भाइयों के सामने जिनकी संख्या कुछ सौ से अधिक न होगी, इनके सामने अपनी बात कहकर चले जायेंगे। क्या इससे कोई बड़ा इनक्लाब आ जायेगा। मगर नही दुनिया में सब काम इसी तरह से होते हैं। अगर करने वाले शुरू में यह देखते और यह सोचते कि कितने आदमी सुनने वाले हैं कितने आदमी काम करने वाले हैं तो दुनिया में एक काम भी नही होता। यह देश भी आजाद न होता। इस देश को आजाद कराने के लिये जिन्होंने कोशिश की—गाँधी जी ने कोशिश की, अली विरादरान ने कोशिश की और मोतीलाल जी ने कोशिश की, उस समय क्या उनके पास जमघटा था क्या उनकी बात सुनने के लिये एक एक लाख और दो दो लाख आदमी जमा हुये थे ? यह तो बहुत बाद में हुआ है। इसी तरह एक बीज क्या

रंग लाता है। अगर किसान यह सोचे कि यह मुट्ठी भर बीज क्या कर लेंगे ? इनको जमीन में डालकर बेकार समय गँवाना है तो भूखों मर जायें।

आपसे हमें यही कहना है कि यहाँ ऐसा माहौल बनाइये—मुहब्बत और विश्वास का माहौल कि एक दूसरे पर एतबार और भरोसा हो। देखिये हमारे कुरआन शरीफ़ में एक बात ऐसी कही गई है जिससे एक आइडियल सोसाइटी की तस्वीर सामने आती है। एक मौका ऐसा था कि किसी ने किसी पर आरोप लगाया तो क़ुरान कहता है कि जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने यह क्यों नहीं कह दिया कि यह बात ग़लत होगी। इसलिए कि हम नहीं कर सकते तो दूसरा भी नहीं कर सकता। हर आदमी दूसरे आदमी का आइना (दर्पण) है। ऐसी ही हमारी आइडियल सोसाइटी होनी चाहिये कि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति ने चोरी की तो यह सोचें कि—क्या हम चोरी कर सकते हैं। यह बात ग़लत होगी। हम चोरी नहीं कर सकते तो वह हमारा भाई भी चोरी नहीं कर सकता तो कुरआन ऐसी सोसाइटी बनाना चाहता है।

www.abulhasanali

यह भरोसा और यह कानफ़ीडेंस होना चाहिए कि आदमी सुनते ही न मान ले। आज तो यह है कि अगर किसी के खिलाफ़ कोई बात कही, सुनते ही मान ली जायेगी और अगर अच्छी बात कही तो हजार जिरहें होंगी। साहब, आपने देखा ! क्या आपने अपनी आँख से देखा था ? क्या आपने आजमाया था ? क्या आप उस समय जाग रहे थे ? दस बातें कहेंगे। अरे कोई अच्छी बात कहके तो देखे। और अगर कोई अभी आकर यूँ ही कह दे कि यह मोलवी साहब, आप इन्हें पहिचानते हैं ? अरे यह मोलवी साहब बड़े तेज हैं। मालूम नहीं क्या यह करते हैं। बस पन्द्रह बीस आदमियों को यक़ीन आ जायेगा।

भाई ! आप दुकान पर जाते हैं। सौदा लाते हैं। सारा काम दुनिया में भरोसे पर चल रहा है। आप डाक्टर के पास जाते हैं। इस भरोसे पर जाते हैं कि यह अपने फ़न से वाक़िफ़ हैं। यह हमदर्दी करते हैं। यह अच्छी दवा देंगे। विद्यार्थी अध्यापक से पढ़ता है तो वह भी इसी भरोसे पर कि आप हमसे ज्यादा जानते हैं। आप हमें ज्ञान दे सकते हैं। तो जो चीज एक दूसरे से मिलती है, बांधे हुए है वह विश्वास और भरोसा। इसको आप कांट दीजिये तो सब अलग अलग गिर जायेंगे। इकाइयाँ सब बिखर जायेंगी। दुनिया में इन इकाइयों को जो चीज मिलाये हुए है और उनका एक पुर्जा बनाये हुए है वह हैं विश्वास और भरोसा और अच्छी आशा। इसको आप काट दीजिये सब बिखर कर रह जायेगा। एक समाज भी नहीं चल सकेगा एक गाँव नहीं चल सकेगा।

www.abulhasanali

बस यही हमें कहना है आपसे और पूरे हिन्दुस्तान से। यही हमारे इस सफर का मक़सद है और यही पयामे इन्सानियत का पैग़ाम (सन्देश) है। आप सब पढ़े लिखे लोग हैं ज्यादा लम्बी तकरीर की जरूरत नहीं।

प्रेम और विश्वास का वातावरण बनाइये और भारत को स्वर्ग बनाने का प्रयास कीजिये।